Ek Musalman Ki Izzat (Hindi)

अमीरे अहले सुन्नत की किताब ''ग़ीबत की तबाह कारियां'' से लिये गए मवाद की दूसरी क़िस्त

एक मुसल्मान की इ़ज़्ज़त

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी

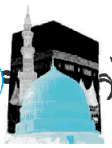

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

तालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

एक मुसलमान की इज़्ज़त

येह रिसाला **(एक मुसलमान की इज़्ज़त)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की
मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hindibook@dawateislamihind.net

ग़ीबत के अन्दाज़ : आशिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मक्तबतुल मदीना की किताब, "**उ़यूनुल ह़िकायात**" ह़िस्सए दुवुम (413 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 313 पर है ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिस मुह़ासिबी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **ग़ीबत** से बच ! बेशक वोह ऐसा अ़जीब शर (या'नी बुराई) है जिसे इन्सान ख़ुद आगे बढ़ कर ह़ासिल करता है। तेरा उस चीज़ के बारे में क्या ख़याल है जो तुझे एह़सान फ़रामोशी पर उभारे, तेरी इतनी नेकियां छीन कर उन को दे दे जिन की तूने **ग़ीबत** की है यहां तक कि वोह राज़ी हो जाएं क्यूं कि बरोज़े क़ियामत दिरहम व दीनार काम नहीं आएंगे। बेशक ! जितना तू मुसल्मानों की इ़ज़्ज़त को नुक़्सान पहुंचाएगा उतनी ही मिक़्दार में तेरा **दीन** तुझ से ले लिया जाएगा, लिहाज़ा **ग़ीबत** से बच, **ग़ीबत** के मम्बअ़ (या'नी निकलने की जगह) और इस के अस्बाब को पहचान कि तुझ पर **ग़ीबत** किन किन जगहों से आती है। **मज़ीद फ़रमाते हैं :** तवज्जोह से सुन ! बेशक बा'ज़ जाहिल व नादान इस अन्दाज़ पर भी **ग़ीबत** में मुब्तला होते हैं कि गुनहगारों पर ख़्वाह म ख़्वाह **ग़ुस्से** होते और उन से **ह़सद** और **बद गुमानी** करते हैं फिर शैत़ान के बहकावे में आ कर مَعَاذَاللهِ उस **ग़ुस्से** को "दीनी ग़ैरत" का नाम देते और येह कहते सुनाई देते हैं कि मैं अपनी ज़ात के लिये ग़ुस्सा नहीं कर रहा मैं तो दीन के नुक़्सान की वज्ह से फुलां को बुरा भला कहता या डांट डपट करता हूं ! येह ऐसी बुराइयां हैं जो कि अ़क़्ल मन्दों से पोशीदा नहीं। बा'ज़ लोग अहले इ़ल्म होने के बा वुजूद शैत़ान के धोके में आ कर जब किसी की बुराई बयान करते

www.dawateislami.net

हैं तो कहते हैं : "हम तो उस की नसीहत और इस्लाह़ के लिये ऐसा कर रहे हैं, हम तो उस के ख़ैर ख़्वाह और भलाई चाहने वाले हैं।" ह़ालां कि ह़क़ीक़त में ऐसा नहीं होता क्यूं कि अगर वाक़ेई वोह ख़ैर (या'नी भलाई) के त़ालिब होते तो कभी **ग़ीबत** जैसी आफ़त में न पड़ते और उन की नसीहत उन के लिये **ग़ीबत** पर मुआ़विन (मददगार) न होती। (बल्कि जिस ने ग़लत़ी की है बराहे रास्त उस को समझाते या इस्लाह़ का शरई त़रीक़ा इख़्तियार करते, पीठ पीछे **ग़ीबत** करते फिरना येह कौन सा इस्लाह़ का त़रीक़ा है !)

तवज्जोह से सुन ! बसा अवक़ात नेक परहेज़गार लोग भी **ह़ैरत** का इज़्हार करने के अन्दाज़ में अपने मुसल्मान भाई की **ग़ीबत** कर बैठते हैं। रहे उस्ताद, सरदार और अफ़्सर वग़ैरा तो बा'ज़ दफ़्आ़ वोह शफ़्क़त व रह़्म दिली के त़रीक़े से **ग़ीबत** की गहरी खाई में जा गिरते हैं। मसलन अपने शागिर्द या मा तह़्त के बारे में कहते हैं : "अफ़्सोस ! वोह फ़ुलां फ़ुलां ग़लत़ काम (मसलन बुरी सोह़बत या नशे की नुहूसत) में पड़ गया, काश ! बेचारा फ़ुलां बुराई (मसलन हेरोईन पीने) का मुरतकिब न होता !" दर ह़क़ीक़त वोह अफ़्सोस नहीं कर रहे होते इस त़रह़ की बातें कर के इस बहाने वोह उस की पोलें खोल डालते हैं मगर समझते येह हैं कि हम उस से **मह़ब्बत** और हमदर्दी की वज्ह से ऐसा कह रहे हैं ह़ालां कि वोह **ग़ीबत** के गुनाह में पड़ चुके होते हैं, वरना अपने मा तह़्त या शागिर्द का क्या ख़ौफ़ ? पीछे से इस त़रह़ **ग़ीबत** करने के बजाए बराहे रास्त उस को समझा कर सच्ची मह़ब्बत का सुबूत दे सकते थे। बा'ज़ अवक़ात एक शख़्स

www.dawateislami.net

किसी की बुराई को दूसरों के सामने ज़ाहिर करते हुए कहता है : "मैं ने उस की बुराई पर तुम को इस लिये मुत्तलअ़ किया है ताकि तुम अपने भाई के लिये **ख़ुसूसी दुआ** करो।" अपने गुमान में येह इसे हमदर्दी व शफ़्क़त समझता है लेकिन ह़क़ीक़त में येह **ग़ीबत** कर रहा होता है। **अल्लाहु** रह़मान हमें शैत़ान के ख़ुफ़्या वारों से बचाए। हम **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की बारगाहे रह़मत में दुआ करते हैं कि वोह मुसल्मानों की **ग़ीबत** से हमारी ह़िफ़ाज़त फ़रमाए।

(عُیُونُ الْحِکایات (عربی) ص ۳۸۱ مُلَخَّصاً)

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللهُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

अफ़्सोस मरज़ बढ़ता जाता है गुनाहों का
दे दीजे शिफ़ा अ़र्ज़ ऐ सरकारे मदीना है

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 494)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللهُ عَلٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی اللهِ! اَسْتَغْفِرُ اللهَ
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللهُ عَلٰی مُحَمَّد

ना बालिग़ की ग़ीबत : **जिस** त़रह़ बच्चे के साथ झूट बोलने की इजाज़त नहीं इसी त़रह़ उस की **ग़ीबत** की भी मुमानअ़त है। ख़्वाह एक ही दिन का बच्चा हो, बिला मस्लह़ते शर्ई उस की भी बुराई बयान न की जाए। मां बाप और घर के दीगर अफ़राद के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिय्या है उन को चाहिये कि बिला ज़रूरत अपने बच्चों को पीछे से (और मुंह पर भी) ज़िद्दी, शरारती, मां बाप का **ना फ़रमान** वग़ैरा न कहा करें।

www.dawateislami.net

किस बच्चे की ग़ीबत जाइज़ है और किस की ना जाइज़ ? : ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल ह़य्य लख्नवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिदुना इब्ने आ़बिदीन शामी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इमाम इब्ने ह़जर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से नक़्ल किया है : "जिस त़रह़ बालिग़ की **ग़ीबत** ह़राम है उसी त़रह़ **ना बालिग़** और मजनून (या'नी पागल) की **ग़ीबत** भी ह़राम है।" (رَدُّالْمُحتار ج٦ص١٧٦) लेकिन **राक़िमुल ह़ुरूफ़** (या'नी मौलाना अ़ब्दुल ह़य्य साह़िब) के नज़्दीक तफ़्सील बेहतर है : ﴿1﴾ ऐसा ना बालिग़ बच्चा जो फ़िल जुम्ला (या'नी थोड़ी बहुत) समझ रखता हो कि अपनी ता'रीफ़ पर ख़ुश और अपनी बुराई से नाख़ुश होता हो जैसा कि मा'तूह (या'नी आधा पागल भी अपनी ता'रीफ़ और मज़म्मत की समझ रखता है) तो ऐसे ना बालिग़ (बच्चे) की **ग़ीबत** जाइज़ नहीं इसी त़रह़ नीम पागल की भी ना जाइज़ है ﴿2﴾ ऐसे ना समझ बच्चे (मसलन दूध पीते बच्चे) और पागल की भी **ग़ीबत** जाइज़ नहीं जिन का कोई वाली वारिस है, बेशक वोह बच्चा या पागल अपनी ता'रीफ़ या बुराई समझने की तमीज़ नहीं रखता ताहम उन के ऐ़ब बयान करने से उन के मां बाप वग़ैरा को बुरा लगेगा ﴿3﴾ ऐसा ला वारिस बच्चा या ला वारिस पागल जो अपनी ता'रीफ़ व **ग़ीबत** से ख़ुश और नाख़ुश होने की सलाह़िय्यत नहीं रखता उस की **ग़ीबत** जाइज़ है मगर ज़बान को ऐसों की **ग़ीबत** से भी रोकना ही बेहतर है (क्यूं कि बा'ज़ फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ عَلَيْهِم ने मुत्लक़न या'नी एक दिन के बच्चे और मुकम्मल पागल की **ग़ीबत** को भी ह़राम क़रार दिया है) (माख़ूज़ अज़ : ग़ीबत क्या है, स. 20, 21)

www.dawateislami.net

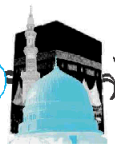

छोटे बच्चे की ग़ीबत की 17 मिसालें : बहर ह़ाल पागल हो या समझदार, बालिग़ हो या ना बालिग़, बूढ़ा हो या दूध पीता बच्चा हर एक की **ग़ीबत** से बचना चाहिये, बच्चों की **ग़ीबतों** की बे शुमार मिसालें हो सकती हैं, क्यूं कि इन की **ग़ीबत** के गुनाह होने की त़रफ़ बहुत कम लोगों की तवज्जोह है, जो मुंह में आया बोल दिया जाता है। यहां नुमूनतन सिर्फ़ **17 मिसालें** पेश की जाती हैं जो कई सूरतों में ग़ीबत में दाख़िल हो सकती हैं : ❁ बिस्तर गन्दा कर देता है ❁ इतना बड़ा हो गया मगर तमीज़ नहीं आई ❁ इस को झूट की आ़दत पड़ गई है ❁ छोटी बहन को नोचता है ❁ छोटे मुन्ने को गोद में लो तो बड़ा मुन्ना **ह़सद** करता है ❁ दोनों मुन्ने एक दूसरे की चुग़लियां खाते रहते हैं ❁ छोटा पढ़ाई में बहुत ज़हीन है मगर बड़ा 8 साल का हुवा अभी तक कुन्द ज़ेहन है ❁ मां को बहुत तंग करता है ❁ मुन्नी रात को बहुत चीख़ती है न सोती है न किसी को सोने देती है ❁ मुन्ने ने ग़ुस्से में लात मार कर पानी का कूलर उलट दिया ❁ बहुत चिड़चिड़ा हो गया है ❁ बात बात पर रूठ जाता है ❁ रोज़ाना खाने के वक़्त झगड़ता है ❁ पढ़ने में कमज़ोर है ❁ बड़ी बच्ची ने छोटी वाली को बाल खींच कर गिरा दिया ❁ बस लड़ता ही रहता है ❁ सुब्ह उठा उठा कर थक जाते हैं मगर जवाब नहीं देता वग़ैरा।

बच्चों को ग़ीबत मत करने दीजिये : उ़मूमन बच्चे अपने छोटे बहन भाइयों और दीगर घर वालों की अपनी तुतली ज़बान में या इशारों से **ग़ीबतें** करते रहते हैं और घर वाले हंस हंस कर दाद देते हैं, कभी किसी को लंगड़ाता देख लेते हैं तो ख़ुद भी उस की नक़्ल

www.dawateislami.net

उतारते हुए लंगड़ा कर चलते हैं और घर वालों से दाद वुसूल करते हैं ह़ालां कि किसी मुअ़य्यन व मा'लूम मा'ज़ूर की इस त़रह़ की नक़्क़ाली भी **ग़ीबत** है। बाप जब कामकाज से शाम को लौटता है तो आ़म त़ौर पर बच्चा या बच्ची दिन भर की "कारकर्दगी" सुनाते हैं, इस से लुत़्फ़ तो बहुत आता है मगर उस कारकर्दगी में **ग़ीबतों** की भी अच्छी ख़ासी भरमार होती है! बच्चों को तो गुनाह नहीं होता मगर औलाद की सह़ीह़ तरबियत करना चूंकि वालिदैन की ज़िम्मेदारी है और यूं बच्चों की ज़बानी **ग़ीबतें** सुनने से औलाद की ग़लत़ तरबियत होती है लिहाज़ा औलाद की ग़लत़ तरबियत का वबाल मां बाप के सर आ जाता है, यक़ीनन बच्चों के **ग़ीबत** करने पर हंस पड़ने से उन की ह़ौसला अफ़्ज़ाई होती है और वोह गोया इस त़रह़ **ग़ीबत** की तरबियत ह़ासिल करते रहते और बेचारे बालिग़ होने के बा'द अक्सर **ग़ीबत** के गुनाह में पक्के हो चुके होते हैं। लिहाज़ा जब भी बच्चा **ग़ीबत** करे, चुग़ली खाए या **झूट** बोले तो उस की तुतली ज़बान से मह़ज़ूज़ या'नी लुत़्फ़ अन्दोज़ होते हुए शैत़ान के बहकावे में आ कर हंसा मत कीजिये, ऐसे मौक़अ़ पर एक दम सन्जीदा हो जाइये उस बात पर उस की ह़ौसला शिकनी कीजिये और मुनासिब अन्दाज़ में उस को समझाइये, जब बार बार उस को समझाते रहेंगे और उस को घर का कोई भी फ़र्द **ग़ीबत** वग़ैरा पर उसे दाद नहीं देगा तो اِنْ شَآءَاللّٰه ख़ुद भी **ग़ीबत** वग़ैरा सुनने की आफ़तों गुनाहों से बचे रहेंगे और मुन्ना भी बड़ा हो कर اِنْ شَآءَاللّٰه नेक बन्दा बनेगा और **ग़ीबत** वग़ैरा से नफ़रत रखेगा।

www.dawateislami.net

बच्चों की फ़रियाद रसी कीजिये : हां अगर मुन्ना महूज़ बोलने की ख़ातिर नहीं बोल रहा बल्कि आप से फ़रियाद कर के इन्साफ़ त़लब कर रहा है तो बेशक उस की फ़रियाद सुनिये और इमदाद कीजिये। मसलन मुन्ना कहने लगा कि मुन्नी ने मेरा खिलौना छीन कर कहीं छुपा दिया है तो येह **ग़ीबत** नहीं, क्यूं कि मुन्ना मां बाप से फ़रियाद नहीं करेगा तो किस से करेगा ! लिहाज़ा आप मुन्नी से उस का खिलौना दिला दीजिये। अब अगर खिलौना मिल जाने के बा'द मुन्ना इसी बात को मुन्नी की ग़ैर मौजूदगी में मसलन अपनी अम्मी से ज़िक्र करता है कि "मुन्नी ने मेरा खिलौना छीन कर छुपा दिया था तो अब्बू ने मुन्नी को डांट पिलाई और मुझे मेरा खिलौना वापस दिलाया" तो येह बहर ह़ाल **ग़ीबत** है अगर्चे बच्चों को इस का गुनाह न हो। उ़मूमन बच्चे जिन लोगों से मानूस होते हैं उन को फ़रियाद करते रहते हैं तो अगर किसी से मज़्कूरा मिसाल की मानिन्द फ़रियाद की और वोह फ़रियाद रसी या'नी इमदाद नहीं कर सकता। तो अब **ग़ीबत** पर मब्नी फ़रियाद न सुने बल्कि ह़त्तल इम्कान अच्छे अन्दाज़ में बच्चे को टाल दे।

बच्चों से सादिर होने वाली ग़ीबत की 22 मिसालें

❁ मेरा खिलौना तोड़ दिया है ❁ मेरी टॉफ़ी छीन कर खा ली ❁ मेरी आइसक्रीम गिरा दी ❁ मुझे पीछे से "हाउ" कर के डरा देता है, शरीर कहीं का ❁ मुझ पर बिल्ली का बच्चा डाल दिया ❁ मुझे "गन्दा बच्चा" कह कर चिड़ाता है ❁ मेरी नोटबुक फाड़ दी

www.dawateislami.net

❁ मुझे धक्का दे कर गिरा दिया ❁ मेरे कपड़े गन्दे कर दिये ❁ अपनी बाबा साइकिल मेरे पाउं पर चढ़ा दी ❁ अपने कपड़े गन्दे कर देता है ❁ वोह गन्दा बच्चा है ❁ अम्मी के पास मेरी चुग़लियां लगाता है ❁ झूट बोल कर उस्ताद से मुझे मार खिलाई थी ❁ अम्मी मद्रसे का बोलती है तो रोता है ❁ मुन्नी अम्मी को मारती है ❁ उस्ताद ने उस को कल "मुर्ग़ा" बनाया था ❁ इतना बड़ा हो गया मगर निप्पल चूसता है ❁ हर वक़्त उस की नाक बहती रहती है ❁ रोज़ रोज़ पेन्सिल गुमा देता है ❁ उस दिन अब्बू की जेब से पैसे चुरा लिये थे ❁ उस दिन अम्मी ने उस की ख़ूब पिटाई लगाई थी।

बच्चों को झूटे बहलावे मत दीजिये : आ़शिकाने रसूल की मदनी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के मक्तबतुल मदीना की किताब "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा 16 (312 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 159 ता 160 पर है : अबू दावूद व बैहक़ी ने **अ़ब्दुल्लाह** बिन आ़मिर رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत की, कहते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे मकान में तशरीफ़ फ़रमा थे। मेरी मां ने मुझे बुलाया कि आओ तुम्हें दूंगी। हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : क्या चीज़ देने का इरादा है ? उन्हों ने कहा, खजूर दूंगी। इर्शाद फ़रमाया : "अगर तू कुछ नहीं देती तो येह तेरे ज़िम्मे **झूट** लिखा जाता।" (سُنَنِ ابوداؤد ج ٤ ص ٣٨٧ حدیث ٤٩٩١)

देखा आप ने ! बच्चों के साथ भी **झूट** बोलने की इजाज़त नहीं, अफ़्सोस ! आज कल बच्चों को बहलाने के लिये अक्सर लोग **झूटमूट** इस त़रह़ कह दिया करते हैं कि तुम्हारे लिये खिलोने लाएंगे, हवाई जहाज़ ला कर देंगे वग़ैरा। इसी त़रह़ डराने के लिये अक्सर

www.dawateislami.net

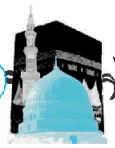

माएं भी **झूट** बोल दिया करती हैं कि वोह बिल्ली आई, कुत्ता आया वग़ैरा। जिन लोगों ने ऐसा किया उन को चाहिये कि सच्ची तौबा करें।

गूंगा क़ादियानी कैसे मुसल्मान हुवा : मदनी मुन्नों की ग़ीबतों से ख़ुद को बचाने और उन का भी ग़ीबतों से बचने का ज़ेहन बनाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के **मदनी माहोल** से हर दम वाबस्ता रहिये, **मदनी क़ाफ़िलों** के मुसाफ़िर बनिये, सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में पाबन्दी से शिर्कत कीजिये, **मदनी इन्आ़मात** के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी गुज़ारिये। आप की तरग़ीब के लिये एक अनोखी **मदनी बहार** पेश की जाती है, ग़ौर से सुनिये और झूमिये : चुनान्चे एक गूंगे बहरे इस्लामी भाई जो **दा'वते इस्लामी** के **मदनी माहोल** की बरकत से गुनाहों से ताइब हो कर नेकियों की राह पर गामज़न हो चुके थे। उन के घर के क़रीब एक गूंगे बहरे शख़्स की रिहाइश थी जो **क़ादियानी** था। येह **"गूंगे इस्लामी भाई"** उस गूंगे क़ादियानी से मुलाक़ात कर के इशारों की ज़बान में **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए राहे हक़ की दा'वत पेश किया करते और उसे समझाते कि दीने इस्लाम ही वोह वाहिद मज़्हब है जिस में दुन्या व आख़िरत की भलाइयां पोशीदा हैं और हक़ीक़ी क़ल्बी सुकून भी इसी मज़्हबे हक़ की क़बूलिय्यत में है। वोह गूंगा क़ादियानी दा'वते इस्लामी के गूंगे मुबल्लिग़ की पुर तासीर मदनी बातों में दिलचस्पी तो लेता मगर कोई वाज़ेह जवाब न देता। वोह (गूंगा क़ादियानी) कुछ दुन्यवी मसाइल की वज्ह से बहुत परेशान था और सुकून की तलाश में था। इसी दौरान दा'वते इस्लामी के **गूंगे मुबल्लिग़** ने उसे **दा'वते**

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

इस्लामी के बैनल अक़्वामी तीन दिन के **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की दा'वत दी, जिसे उस ने क़बूल कर लिया। जब वोह **"गूंगा क़ादियानी"** मदीनतुल औलिया, **दा'वते इस्लामी** के **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत के लिये **सहराए मदीना** पहुंचा तो हर त़रफ़ **सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ की बहारें** और **दुरूदो सलाम की सदाएं** थीं, अल ग़रज़ एक अ़जीब रूह़ परवर समां था। येह मनाज़िर देख कर वोह गूंगा क़ादियानी इस **मदनी माह़ोल** से इस क़दर मुतअस्सिर हुवा कि उस ने वहीं इज्तिमाअ़ में अपने बात़िल मज़्हब क़ादियानिय्यत से तौबा की और **कलिमा पढ़ कर मुसल्मान हो गया** और **ग़ौसे पाक** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ग़ुलामी का पट्टा अपने गले में डाल कर **"क़ादिरी रज़वी"** भी बन गया।

दौलते दुन्या से बे रग़बत मुझे कर दीजिये मेरी ह़ाजत से मुझे ज़ाइद न करना मालदार
अ़र्सए महशर में आक़ा लाज रखना आप ही दामने अ़त्तार है सरकार ! बेह़द दाग़दार

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 218)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

मुसल्मान की बे इज़्ज़ती कबीरा गुनाह है : हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्के मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : बेशक किसी मुसल्मान की नाह़क़ बे इ़ज़्ज़ती करना कबीरा गुनाहों में से है। (سُنَنِ اَبوداؤد ج ٤ ص ٣٥٣ حديث ٤٨٧٧)

ख़ुदा व मुस्त़फ़ा को ईज़ा देने वाला : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! ह़क़ीक़त येह है कि एक मुसल्मान अपने दूसरे मुसल्मान भाई

www.dawateislami.net

की इज़्ज़त का मुहाफ़िज़ है मगर अफ़्सोस ! ऐसा नाज़ुक दौर आ गया है कि अब अक्सर मुसल्मान ही दूसरे मुसल्मान भाई की इज़्ज़त के पीछे पड़ा हुवा है जी भर कर **ग़ीबतें** कर रहा है और चुग़्लियां खा रहा है, बिला तकल्लुफ़ तोहमतें लगा रहा है, बिला वज्ह दिल दुखा रहा है, **आशिक़ाने रसूल** की मदनी तहरीक, **दा'वते इस्लामी** के मक्तबतुल मदीना के रिसाले, "**ज़ुल्म का अन्जाम**" सफ़हा 19 ता 20 पर है : **हुक़ूक़ुल इबाद** का मुआमला बड़ा नाज़ुक है मगर आह ! आज कल बेबाकी का दौर दौरा है, अवाम तो कुजा ख़वास कहलाने वाले भी उमूमन इस की तरफ़ से ग़ाफ़िल रहते हैं। गुस्से का मरज़ आम है इस की वज्ह से अक्सर "ख़वास" भी लोगों की दिल आज़ारी कर बैठते हैं और इस की तरफ़ उन की बिल्कुल तवज्जोह नहीं होती कि किसी मुसल्मान की बिला वज्हे शरई दिल आज़ारी गुनाह व हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। मेरे आक़ा **आ'ला हज़रत** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **फ़तावा रज़विय्या** शरीफ़ जिल्द 24 सफ़हा 342 में **तबरानी** शरीफ़ के हवाले से नक़्ल करते हैं : सुल्ताने दो जहान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : **مَنْ اٰذٰى مُسْلِمًا فَقَدْ اٰذَانِىْ وَمَنْ اٰذَانِىْ فَقَدْ اٰذَى اللّٰه.** (या'नी) जिस ने (बिला वज्हे शरई) किसी मुसल्मान को ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने **अल्लाह** पाक को ईज़ा दी। (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج۲ ص۳۸۷ حدیث ۳۶۰۷) **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ و صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ईज़ा देने वालों के बारे में **अल्लाह** पाक पारह 22 **सूरतुल अह्ज़ाब** आयत नम्बर 57 में इर्शाद फ़रमाता है :

www.dawateislami.net

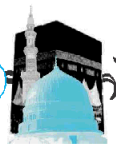

اِنَّ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَاَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿۵۷﴾

(پ۲۲،الاحزاب۵۷)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक जो ईज़ा देते हैं **अल्लाह** और उस के रसूल को उन पर **अल्लाह** की ला'नत है दुन्या व आख़िरत में और **अल्लाह** ने उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।

मोमिन की हुरमत का'बे से बढ़ कर है : "सुनने इब्ने माजह" में है : हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने का'बए मुअ़ज़्ज़मा को मुख़ातब कर के इर्शाद फ़रमाया : **मोमिन की हुरमत तुझ से ज़ियादा है।** (سُنَنِ اِبن ماجه ج٤ ص٣١٩ حديث ٣٩٣٢)

कामिल मुसल्मान की ता'रीफ़ : सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : اَلْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُوْنَ مِنْ لِّسَانِهٖ وَيَدِهٖ۔ या'नी मुसल्मान वोह है कि उस के हाथ और ज़बान से दूसरे मुसल्मान महफ़ूज़ रहें।

(صَحیح بُخاری ج۱ ص۱۵ حدیث۱۰)

दाइरए ईमान से निकल जाने का ख़तरा : ए आ़शिक़ाने रसूल ! कामिल मुसल्मान वोही है जो ज़बान से किसी को गाली न दे, बिला इजाज़ते शर्ई किसी को बुरा न कहे, किसी की **ग़ीबत** न करे, किसी को बे वुक़ूफ़ न कहे, किसी के ऐ़ब को न खोले, किसी का भेद न खोले और हाथ से किसी को तक्लीफ़ न दे, किसी की दिल आज़ारी न करे, बिला इजाज़ते शर्ई किसी को न मारे, किसी को तन्क़ीदे बे जा का निशाना न बनाए, जो शख़्स ऐसा न हुवा बल्कि

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

लोगों को उस ने हर त़रह़ की तक्लीफ़ दी, हाथ से मारा, आंख से किसी की त़रफ़ ईज़ा देने वाले अन्दाज़ से इशारा किया, हर शख़्स उस से तंग व बेज़ार रहा तो वोह शख़्स **कामिल मुसल्मान** नहीं है, ईमान उस के दिल में मज़्बूत़ नहीं है, इन्तिक़ाल के वक़्त एह़तिमाल है कि مَعَاذَاللّٰه शैत़ान ग़ालिब आ जाए और हर त़रह़ से उसे वस्वसे डाले और مَعَاذَاللّٰه ثُمَّ مَعَاذَاللّٰه वोह शख़्स दाइरए ईमान से निकल जाए और **अल्लाह** करीम न करे उस का क़दम सिराते मुस्तक़ीम से फिसल जाए और वोह जहन्नम की राह इख़्तियार करे, **जन्नत** से मह़रूम रहे। ब ख़िलाफ़ इस के जिस का ईमान कामिल हो, इस्लाम की सच्ची **मह़ब्बत** उस के दिल को ह़ासिल हो, कामिल मुसल्मानों वाले आ'माल व अफ़्आ़ल उस के अन्दर पाए जाते हों, बन्दों के ह़ुक़ूक़ गरदन पर न उठाए हों, इस सूरत में بِفَضْلِهٖ تَعَالٰی शैत़ान का वस्वसा मौत के वक़्त असर अन्दाज़ न होगा, दरियाए ईमान जोश मारेगा, फ़िरिश्ता इब्लीस को भगा देगा, वसाविस को दूर करेगा, इस लिये ख़ातिमा बिलख़ैर होगा, शैत़ान अपना सर पीटेगा, अपने सर पर ख़ाक उड़ाएगा और बहुत चीख़ेगा चिल्लाएगा।

ज़िन्दगी और मौत की है या इलाही कश्मकश
जां चले तेरी रिज़ा पर बे कसो मजबूर की

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 96)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

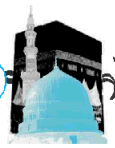

बद अ़क़ीदगी से तौबा : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! कामिल मुसल्मान बनने के लिये, **ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **मदनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **मदनी इन्आ़मात** के मुताबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये और हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में अव्वल ता आख़िर शिर्कत कीजिये। आप की तरग़ीब के लिये ईमान अफ़रोज **मदनी बहार** पेश की जाती है, चुनान्चे एक इस्लामी भाई का बा'ज़ लोगों की सोहबत में बैठने की बिना पर ज़ेहन ख़राब हो गया था और वोह तीन साल तक **नियाज़ शरीफ़** और **मीलाद शरीफ़** वग़ैरा पर घर में ए'तिराज़ करते, रहे उन्हें पहले **दुरूद शरीफ़** से बहुत शग़फ़ था (या'नी बेहद दिलचस्पी व रग़बत थी) मगर ग़लत़ सोहबत के सबब **दुरूदे पाक** पढ़ने का जज़्बा ही दम तोड़ गया। इत्तिफ़ाक़ से एक बार उन्हों ने **दुरूद शरीफ़** की फ़ज़ीलत पढ़ी तो वोह जज़्बा दोबारा जागा और उन्हों ने कसरत के साथ **दुरूदे पाक** पढ़ने का मा'मूल बना लिया। एक रात जब **दुरूद शरीफ़** पढ़ते पढ़ते सो गए तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه उन्हें ख़्वाब में **सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद** का दीदार हो गया और बे साख़्ता उन की ज़बान से اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه जारी हो गया। सुब्ह

www.dawateislami.net

जब उठे तो उन के दिल के अन्दर हलचल मची हुई थी, वोह इस सोच में पड़ गए कि आख़िर हक़ का रास्ता कौन सा है ? हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से **दा'वते इस्लामी** वाले आ़शिक़ाने रसूल का सुन्नतों की तरबियत का **मदनी क़ाफ़िला** उन के घर की क़रीबी मस्जिद में आया तो किसी ने उन्हें **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की दा'वत दी, वोह चूंकि **मुतज़बज़िब** (Confused) थे इस लिये तलाशे हक़ के जज़्बे के तह़्त **मदनी क़ाफ़िले** के मुसाफ़िर बन गए। उन्हों ने सफ़ेद इमामा बांधा था मगर सब्ज़ इमामे वाले **मदनी क़ाफ़िले** वालों ने सफ़र के दौरान उन पर न किसी क़िस्म की तन्क़ीद की न ही त़न्ज़ किया बल्कि अज्नबिय्यत ही महसूस न होने दी। **अमीरे क़ाफ़िला** ने **मदनी इन्आ़मात** का तआ़रुफ़ करवाया और इस के मुत़ाबिक़ मा'मूल रखने का मश्वरा दिया। उन्हों ने **मदनी इन्आ़मात** का बग़ौर मुत़ालआ़ किया तो चोंक उठे क्यूं कि उन्हों ने इतने ज़बर दस्त तरबियती **मदनी फूल** ज़िन्दगी में पहली ही बार पढ़े थे। आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत और **मदनी इन्आ़मात** की बरकत से उन पर **अल्लाह** करीम का फ़ज़्ल हो गया। उन्हों ने मदनी क़ाफ़िले के तमाम मुसाफ़िरों को जम्अ़ कर के ए'लान किया कि कल तक मैं बद अ़क़ीदा था आप सब गवाह हो जाइये कि आज से **तौबा** करता हूं और **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से वाबस्ता रहने की निय्यत करता हूं। इस्लामी भाइयों ने इस पर फ़रह़त व मसर्रत का इज़्हार किया। दूसरे दिन **30** रुपै की नुक्ती (एक बेसन की मिठाई जो मोती के दानों की त़रह़ बनी होती है) मंगवा कर उन्हों ने सरकारे बग़दाद हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म शैख़ **अ़ब्दुल**

www.dawateislami.net

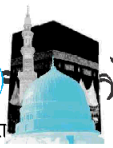

क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की नियाज़ दिलवाई और अपने हाथों से तक़्सीम की। वोह 35 साल से **सांस के मरज़** में मुब्तला थे, कोई रात बिग़ैर तक्लीफ़ के न गुज़रती थी, नीज़ उन की सीधी **दाढ़ में तक्लीफ़** थी जिस के बाइस सहीह तरह खा भी नहीं सकते थे। اَلْحَمْدُ لِلّٰه **मदनी क़ाफ़िले** की बरकत से दौराने सफ़र उन्हें सांस की कोई तक्लीफ़ न हुई और اَلْحَمْدُ لِلّٰه वोह सीधी दाढ़ से बिग़ैर किसी तक्लीफ़ के खाना भी खाने लगे। उन का बयान है कि मेरा दिल गवाही देता है कि **अ़क़ाइदे अहले सुन्नत** हक़ हैं और मेरा हुस्ने ज़न है कि **दा'वते इस्लामी** का मदनी माहोल **अल्लाह** पाक और उस के **प्यारे रसूल** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में मक़्बूल है।

छाए गर शैतनत, तो करें देर मत क़ाफ़िले में चलें, क़ाफ़िले में चलो
सोहबते बद में पड़ कर, अ़क़ीदा बिगड़ गर गया हो चलें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

बद मज़्हबों से दूर रहने की हदीसों में ताकीद : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **दा'वते इस्लामी** के आ़शिक़ाने रसूल के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की कैसी बरकतें हैं बल्कि हक़ीक़त येह है कि उस ख़ुश नसीब इस्लामी भाई को **दुरूदे पाक की कसरत** की बरकत से दा'वते इस्लामी का **मदनी क़ाफ़िला** भी मिला और उस पर हिदायत का रास्ता भी खुला। येह इस्लामी भाई बद मज़्हबों की सोहबत की वज्ह से सीधे रास्ते से भटक गए थे, हम सभी को चाहिये कि बुरी सोहबत से हमेशा

www.dawateislami.net

दूर रहें और फ़क़त **आशिक़ाने रसूल** ही की सोहबत अपनाएं। बद मज़्हबों की सोहबत ईमान के लिये ज़हरे क़ातिल है, इन से दोस्ती और तअल्लुक़ात रखने की अहादीसे मुबारका में मुमानअत है। चुनान्चे सुल्ताने अरब, महबूबे रब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "जो किसी **बद मज़्हब** को सलाम करे या उस से ब कुशादा पेशानी मिले या ऐसी बात के साथ उस से पेश आए जिस में उस का दिल खुश हो, उस ने उस चीज़ की तहक़ीर की जो **अल्लाह** पाक ने **मुहम्मद** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर उतारी।" (تاریخ بغداد ج ١٠ ص ٢٦٢) **अल्लाह** पाक के आख़िरी रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "जिस ने किसी **बद मज़्हब** की (ता'ज़ीम व) तौक़ीर की उस ने दीन के ढा देने पर मदद दी।" (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج ٥ ص ١١٨ حدیث ٦٧٧٢) मेरे आक़ा **आ'ला हज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه **फ़तावा रज़विय्या** शरीफ़ जिल्द 21 सफ़हा 184 पर फ़रमाते हैं : सुन्नियों को ग़ैर मज़्हब वालों से इख़्तिलात (मेलजोल) ना जाइज़ है ख़ुसूसन यूं कि वोह (बद मज़्हब) अफ़्सर हों (और) येह (सुन्नी) मा तहत। قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی : (या'नी **अल्लाह** पाक फ़रमाता है)

وَ اِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۶۸﴾
(پ ٧، الانعام ٦٨)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो कहीं तुझे शैतान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ।

रहमते आलम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअज़्ज़म है : तुम उन से दूर रहो और वोह तुम से दूर रहें, कहीं वोह तुम्हें गुमराह न कर दें और फ़ितने में न डाल दें। (مُقدّمہ صَحیح مُسلِم ص ٩ حدیث ٧)

www.dawateislami.net

बद मज़्हब को उस्ताद बनाना : बद मज़्हब से दीनी या दुन्यावी ता'लीम लेने की मुमानअ़त करते हुए मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत,** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ग़ैर मज़्हब वालियों (या वालों) की सोह़बत आग है, ज़ी इ़ल्म आ़क़िल बालिग़ मर्दों के मज़्हब (भी) इस में बिगड़ गए हैं। **इमरान बिन ह़ित्तान रक़्क़ाशी का क़िस्सा मश्हूर है, येह ताबिईन के ज़माने में एक बड़ा मुह़द्दिस था, ख़ारिजी मज़्हब की औ़रत** (से शादी कर के उस) **की सोह़बत में** (रह कर) مَعَاذَاللّٰه **ख़ुद ख़ारिजी हो गया और येह दा'वा किया था कि** (उस से शादी कर के) **उसे सुन्नी करना चाहता है।** (यहां वोह नादान लोग इ़ब्रत ह़ासिल करें जो ब ज़ो'मे फ़ासिद ख़ुद को बहुत "पक्का सुन्नी" तसव्वुर करते और कहते सुनाई देते हैं कि हमें अपने मस्लक से कोई हिला नहीं सकता, हम बहुत ही मज़्बूत़ हैं !) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मज़ीद फ़रमाते हैं : जब सोह़बत की येह ह़ालत (कि इतना बड़ा मुह़द्दिस गुमराह हो गया) तो (बद मज़्हब को) उस्ताद बनाना किस दरजा बदतर है कि उस्ताद का असर बहुत अ़ज़ीम और निहायत जल्द होता है, तो ग़ैर मज़्हब औ़रत (या मर्द) की सिपुर्दगी या शागिर्दी में अपने बच्चों को वोही देगा जो आप (ख़ुद ही) दीन से वासित़ा नहीं रखता और अपने बच्चों के बद दीन हो जाने की परवा नहीं रखता।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 23, स. 692)

महफ़ूज़ सदा रखना शहा ! बे अदबों से
और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अदबी हो

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 315)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** पाक उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

अ़ज़ाबे क़ब्र के होलनाक मनाज़िर : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللهُ عَنْه से मरवी है कि सरकारे आ़ली वक़ार नबियों के सरदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **बक़ीए ग़रक़द** तशरीफ़ ला कर दो **क़ब्रों** के पास खड़े हो कर इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम ने फ़ुलां और फ़ुलाना को, या फ़रमाया : फ़ुलां फ़ुलां को दफ़्न कर दिया ? सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : जी हां, **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! (बि इ़ज़्ने परवर्दगार ग़ैब की ख़बरें देते हुए) इर्शाद फ़रमाया : अभी अभी फ़ुलां को (क़ब्र में) बिठा कर मारा गया है। फिर फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! उसे इतना मारा गया है कि उस का हर हर उ़ज़्व जुदा हो चुका है और उस की क़ब्र में **आग** भड़का दी गई है और उस ने ऐसी **चीख़** मारी है जिसे सिवाए जिन्नो इन्सान के तमाम मख़्लूक़ ने सुन लिया है और अगर तुम्हारे दिलों में फ़साद न होता और तुम ज़ियादा बातें न करते तो तुम भी वोह सुनते जो मैं सुनता हूं। फिर फ़रमाया : अब दूसरे को भी मारा जा रहा है। फिर फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है ! उसे भी इस क़दर ज़ोर से मारा गया है कि उस की भी हर हर हड्डी जुदा हो गई है और उस की क़ब्र में भी **आग** भड़का दी गई है, उस ने भी ऐसी **चीख़** मारी है जिसे जिन्नो इन्सान के इलावा तमाम मख़्लूक़ ने सुन लिया है और

www.dawateislami.net

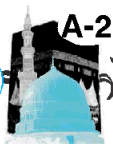

अगर तुम्हारे दिलों में फ़साद न होता और तुम ज़ियादा कलाम न करते तो तुम भी वोह सुनते जो मैं सुनता हूं। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! इन दोनों का गुनाह क्या है ? इर्शाद फ़रमाया : **पहला पेशाब से नहीं बचता था और दूसरा लोगों का गोश्त खाता** (या'नी ग़ीबत करता) **था**। (صَرِيحُ السُّنَّة لِلطَّبَرِى ص٤٣ حديث٤٠)

मुसल्मानो ! डर जाओ ! : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! इस रिवायत में **ग़ीबत** करने और पेशाब से न बचने वालों के लिये इ़ब्रत के बे शुमार **मदनी फूल** हैं, पेशाब कर के जो लोग पाकी ह़ासिल न कर के बदन और कपड़े वग़ैरा नापाक कर लेते हैं उन को भी डर जाना चाहिये, **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : पेशाब से बचो आ़म तौर पर अ़ज़ाबे क़ब्र इसी की वज्ह से होता है। (سُنَنِ دارقُطنى ج١ ص١٨٤ حديث٤٥٣) इस ज़िम्न में एक **लरज़ा ख़ैज़ ह़िकायत** मुलाह़ज़ा हो चुनान्चे

पेशाब से न बचने वाले की क़ब्र से पुकार ! : आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** की किताब, **"उ़यूनुल ह़िकायात"** ह़िस्सए दुवुम (413 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 187 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने उ़मर رَضِىَ اللهُ عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : एक मर्तबा दौराने सफ़र मेरा गुज़र ज़मानए जाहिलिय्यत के क़ब्रिस्तान से हुवा। यकायक एक **मुर्दा क़ब्र से बाहर निकला**, उस की गरदन में आग की ज़न्जीर बंधी हुई थी, मेरे पास पानी का एक बरतन था। जब उस ने मुझे देखा तो कहने लगा : "ऐ **अ़ब्दुल्लाह** ! मुझे थोड़ा सा पानी पिला दो !" मैं ने दिल में कहा :

इस ने मेरा नाम ले कर मुझे पुकारा है या तो येह मुझे जानता है या अ़रबों के त़रीक़े के मुत़ाबिक़ "**अ़ब्दुल्लाह**" कह कर पुकार रहा है। फिर अचानक उसी क़ब्र से एक और शख़्स निकला, उस ने मुझ से कहा : "ऐ **अ़ब्दुल्लाह** ! इस ना फ़रमान को हरगिज़ पानी न पिलाना, येह **काफ़िर** है।" दूसरा शख़्स पहले को घसीट कर वापस क़ब्र में ले गया। मैं ने वोह रात एक बुढ़िया के घर गुज़ारी, उस के घर के क़रीब एक क़ब्र थी, मैं ने क़ब्र से येह आवाज़ सुनी : بَوْلٌ وَّمَا بَوْلٌ؟شَنٌّ وَّمَاشَنٌّ ؟ या'नी "पेशाब ! पेशाब क्या है ? मश्कीज़ा ! मश्कीज़ा क्या है ?" इस आवाज़ के मुतअ़ल्लिक़ बुढ़िया से पूछा तो उस ने कहा : येह मेरे शौहर की क़ब्र है, इसे दो ख़त़ाओं की सज़ा मिल रही है। पेशाब करते वक़्त येह **पेशाब के छींटों से नहीं बचता था,** मैं इस से कहती कि तुझ पर अफ़्सोस ! जब ऊंट पेशाब करता है तो वोह भी अपने पाउं कुशादा कर के छींटों से बचता है, लेकिन तू इस मुआ़मले में बिल्कुल भी एह़तियात़ नहीं करता, मेरा शौहर मेरी इन बातों पर कोई तवज्जोह न देता, फिर येह मर गया तो मरने के बा'द से आज तक इस की क़ब्र से रोज़ाना इसी त़रह़ की आवाज़ें आती हैं। मैं ने पूछा : شَنٌّ وَّمَا شَنٌّ؟ या'नी "मश्कीज़ा ! मश्कीज़ा क्या है ?" की आवाज़ आने का क्या मक़्सद है ? बुढ़िया ने कहा : एक मर्तबा इस के पास एक प्यासा शख़्स आया, उस ने पानी मांगा तो (इस ने उस को परेशान करने के लिये ख़ाली मश्कीज़े की त़रफ़ इशारा करते हुए) कहा : जाओ ! उस मश्कीज़े से पानी पी लो, वोह प्यासा बे ताबाना मश्कीज़े

www.dawateislami.net

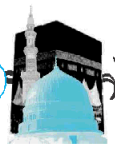

की त़रफ़ लपका, जब उठाया तो उसे ख़ाली पाया, प्यास की शिद्दत से वोह बेहोश हो कर गिर गया और उस की मौत वाक़ेअ़ हो गई। फिर जब से मेरा शौहर मरा है आज तक रोज़ाना उस की क़ब्र से आवाज़ आती है : شَنٌّ وَّمَا شَنٌّ या'नी "मश्कीज़ा ! मश्कीज़ा क्या है ?" ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर हो कर सारा वाक़िआ़ अ़र्ज़ किया तो सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तन्हा सफ़र करने से मन्अ़ फ़रमा दिया। (عُيونُ الْحِكايات(عربی) حصّہ ۲ ص ۳۰۷)

हर गुनाह के बदले एक उ़ज़्व काटा जाएगा ! : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! गुनाह चाहे कितना ही छोटा हो अगर उस पर पकड़ हुई तो ख़ुदा की क़सम ! उस का अ़ज़ाब न सहा जा सकेगा। गुनाहों की सज़ा से डराते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस बिन उ़बैद رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : पांच दिरहम (अह़नाफ़ के नज़्दीक दस दिरहम) की चोरी पर हाथ काटा जाता है और इस में शक नहीं कि तुम्हारा सब से छोटा गुनाह भी पांच दिरहम की चोरी से तो ज़ियादा ही क़बीह़ (या'नी बुरा) है लिहाज़ा तुम्हारे **हर गुनाह के बदले आख़िरत में तुम्हारा एक उ़ज़्व काटा जाएगा।** (تَنبِيهُ الْمُغْتَرِّين ص ۱۷۲)

नज़्अ़, क़ब्र और मुन्कर नकीर की ख़ौफ़नाक मन्ज़र कशी : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! वाक़ेई क़ब्र का मुआ़मला बेह़द

तश्वीश नाक है, क्या मा'लूम आज ही मौत आ जाए और देखते ही देखते हम क़ब्र की तन्हाइयों में जा पहुंचें, अव्वल तो मौत के सदमे का तसव्वुर ही जान को घुलाने वाला है और ऊपर से **ख़ुदा व मुस्तफ़ा** عَزَّوَجَلَّ و صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी की सूरत में अ़ज़ाब हुवा तो कैसे बरदाश्त हो सकेगा ! **मुर्दे के सदमे** का नक़्शा खींचते हुए **मेरे** आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : वोह मौत का ताज़ा सदमा उठाए हुए रूह़ (कि निकलते वक़्त) जिस का अदना झटका सो ज़र्बे शमशीर (या'नी तलवार के सो वार) के बराबर, जिस का सदमा हज़ार ज़र्बे तैग़ (या'नी तलवार के हज़ार वार) से सख़्त तर, बल्कि मलकुल मौत (عَلَيْهِ السَّلَام) का देखना ही हज़ार तलवार के सदमे से बढ़ कर। वोह नई जगह, वोह निरी तन्हाई, वोह हर त़रफ़ भयानक बे कसी छाई, इस पर वोह नकीरैन (या'नी मुन्कर नकीर) का अचानक आना, वोह सख़्त हैबतनाक सूरतें दिखाना कि आदमी दिन को हज़ारों के मज्मअ़ में देखे तो ह़वास बजा न रहें, काला रंग, नीली आंखें देगों के बराबर बड़ी, अबरक़ (चमकीली धात) की त़रह़ शो'ला ज़न, सांस जैसे आग की लपट, बैल के सींगों की त़रह़ लम्बे नोकदार कीले (या'नी अगले दांत), ज़मीन पर घिसटते सर के पेचीदा बाल, क़दो क़ामत जिस्म व जसामत बला व क़ियामत कि एक शाने (या'नी कन्धे) से दूसरे (कन्धे) तक मन्ज़िलों (या'नी बे शुमार किलो मीटर्ज़) का फ़ासिला, हाथों में लोहे का वोह गुर्ज़ (या'नी हथोड़ा) कि अगर

www.dawateislami.net

एक बस्ती के लोग बल्कि जिन्नो इन्स जम्अ़ हो कर उठाना चाहें न उठा सकें, वोह गरज कड़क की होलनाक आवाज़ें, वोह दांतों से ज़मीन चीरते ज़ाहिर होना, फिर इन आफ़ात पर आफ़त येह कि सीधी त़रह़ बात न करना, आते ही झन्झोड़ डालना, मोहलत न देना, कड़क्ती झिड़क्ती आवाज़ों में इम्तिहान लेना। وَ حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ اِرْحَمْ ضُعْفَنَا يَا كَرِيْمُ يَا جَمِيْلُ صَلِّ وَ سَلِّمْ عَلٰى نَبِيِّ الرَّحْمَةِ وَاٰلِهِ الْكِرَامِ وَ سَائِرِ الْاُمَّةِ اٰمِيْنَ اٰمِيْنَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْن.

(**तरजमा :** और **अल्लाह** (पाक) हमारे लिये काफ़ी है और वोह सब से बड़ा कारसाज़ है। ऐ करम फ़रमाने वाले ! हमारी कमज़ोरी पर रह़मो करम फ़रमा, ऐ रब्बे जमील ! दुरूदो सलाम भेज नबिय्ये रह़मत (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर और उन की इ़ज़्ज़त वाली आल और बक़िय्या तमाम उम्मत पर। क़बूल फ़रमा, क़बूल फ़रमा, ऐ सब से ज़ियादा रह़मो करम फ़रमाने वाले !) (फ़तावा रज़विय्या, जि. 9, स. 934 ता 937)

खड़े हैं मुन्कर नकीर सर पर न कोई ह़ामी न कोई यावर
बता दो आ कर मेरे पयम्बर कि सख़्त मुश्किल जवाब में है

(ह़दाइक़े बख़्शिश स. 181)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَى اللهِ! اَسْتَغْفِرُ اللهَ
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ज़ेह़नी कश्मकश से नजात मिली : ग़ीबत करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों

www.dawateislami.net

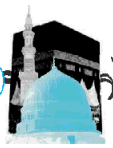

की तरबियत के लिये **मदनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **मदनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में ह़ाज़िरी दीजिये और वहां बग़ौर बयान सुनने की सआ़दत ह़ासिल कीजिये। आप की तरग़ीब के लिये एक **मदनी बहार** पेश की जाती है मुलाह़ज़ा फ़रमाइये : **बाबुल मदीना** के एक इस्लामी भाई दावूद इन्जीनियरिंग कॉलेज बाबुल मदीना के त़ालिबे इ़ल्म थे, बुरे और बद अ़क़ीदा लोगों की सोह़बतों ने उन्हें नज़रिय्यात के मुआ़मलात में "**ज़ेहनी कश्मकश**" में मुब्तला कर दिया था, वोह फ़ैसला नहीं कर पा रहे थे कि कौन सीधे रास्ते पर है। 2 साल का त़वील अ़र्सा यूंही गुज़र गया। एक रोज़ उन की मुलाक़ात एक ऐसे नौ जवान से हुई जिस का अन्दाज़ व किरदार उन के दिल में उतर गया। उस आ़शिक़े रसूल ने सफ़ेद लिबास पहना हुवा था, सर पर सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ और चेहरे पर **इबादत का नूर** था, उस इस्लामी भाई ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उन्हें **सह़राए मदीना**, मदीनतुल औलिया में होने वाले दा'वते इस्लामी के तीन दिन के बैनल अक़्वामी **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की दा'वत पेश की। वोह पहले ही उन से

www.dawateislami.net

मुतअस्सिर हो चुके थे, इन्कार क्यूंकर हो सकता था। उन्हों ने बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की। ह़ज के बा'द सब से ज़ियादा ता'दाद में मुसल्मानों के जम्अ़ होने का मन्ज़र देख कर उन की आंखें डबडबा गईं (या'नी आंसू आ गए), उन के दिल ने गवाही दी कि येही "**अहले ह़क़**" हैं। आख़िरी दिन (11 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1425 हि./26-9-2004) होने वाले बयान "**अल्लाह की ख़ुफ़्या तदबीर**" सुन कर उन के रोंगटे खड़े हो गए। फिर रिक़्क़त अंगेज़ दुआ ने ऐसा असर किया कि उन की ज़िन्दगी बदल गई, और उन के अन्दर कसरत से **नेकियां** करने का जज़्बा पैदा हो गया। चेहरे पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ **दाढ़ी** शरीफ़ भी सजा ली, क़ुरआने करीम ह़िफ़्ज़ करने की भी निय्यत की। एक और **अहम बात** येह कि जब वोह इज्तिमाअ़ में शिर्कत के लिये **सह़राए मदीना** मदीनतुल औलिया जा रहे थे तो उन के वालिद और वालिदा दोनों के हाथ पर **फ़ालिज** (Stroke) का ह़म्ला हो गया था, वोह ज़रा सा भी हाथ नहीं हिला सकते थे। इज्तिमाअ़ में दुआ की बरकत से اَلْحَمْدُ لِلّٰه उन के **फ़ालिज ज़दा हाथ भी ठीक हो गए।**

तेरा शुक्र मौला दिया मदनी माह़ोल न छूटे कभी भी ख़ुदा मदनी माह़ोल
ख़ुदा के करम से ख़ुदा की अ़त़ा से न दुश्मन सकेगा छुड़ा मदनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 647)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

इज्तिमाअ़ में सवाब की निय्यत से शिर्कत करनी चाहिये : ऐ आशिक़ाने रसूल ! देखा आप ने ! एक इस्लामी भाई के सुन्नतों भरा **मदनी हुल्या** अपनाने और **इन्फ़िरादी कोशिश** फ़रमाने की बरकत से "राहे ह़क़" के मुतलाशी को अपनी मन्ज़िल मिल गई ! इस **मदनी बहार** से येह भी मा'लूम हुवा कि **दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त** में शिर्कत की बरकत से बसा अवक़ात दुन्यावी मसाइल भी ह़ल हो जाते हैं, मसलन मरीज़ों को शिफ़ा मिल जाती है, बे रोज़गार बर सरे रोज़गार हो जाते हैं। लेकिन सिर्फ़ दुन्यावी मसाइल के ह़ल की **निय्यत** करने के बजाए त़लबे इल्म और सवाबे आख़िरत कमाने की भी **निय्यतें** ज़रूर करनी चाहिएं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

दो[2] क़ब्रों में होने वाले अ़ज़ाब के अस्बाब : ह़ज़रते सय्यिदुना अबी बक्रह رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ चल रहा था और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरा हाथ थामा हुवा था। एक आदमी आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाईं त़रफ़ था। दरीं अस्ना हम ने अपने सामने **दो क़ब्रें** पाईं तो **अल्लाह** की अ़त़ा से ग़ैब की ख़बरें देने वाले प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इन दोनों को अ़ज़ाब हो रहा है और किसी बड़े अम्र की वज्ह से नहीं हो रहा, तुम में से कौन है जो मुझे एक टहनी ला दे। हम ने एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश की

www.dawateislami.net

तो मैं सब्क़त ले गया और **एक टहनी** (या'नी शाख़) ले कर हाज़िरे ख़िदमत हो गया। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के दो टुकड़े कर दिये और दोनों क़ब्रों पर एक एक रख दिया फिर इर्शाद फ़रमाया : येह जब तक तर रहेंगे इन पर **अ़ज़ाब** में कमी रहेगी और इन दोनों को **ग़ीबत** और **पेशाब** की वज्ह से अ़ज़ाब हो रहा है।

(مُسند اِمام اَحمد بن حنبل ج۷ص۳۰۴ حدیث۲۰۳۹۵)

आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इल्मे ग़ैब है : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! देखा आप ने ! **ग़ीबतों** और पेशाब के छींटों से न बचना क़ब्र के अ़ज़ाब के अस्बाब में से है। आह ! हमारा वोह नाज़ुक बदन जो कि मा'मूली कांटे की चुभन, दोपहर की धूप की तपश व जलन और बुख़ार की मा'मूली सी अगन बरदाश्त नहीं कर सकता वोह क़ब्र का होलनाक अ़ज़ाब कैसे सह सकेगा। **या अल्लाह** पाक ! हम पेशाब की आलूदगियों के जुर्मों, ग़ीबतों, चुग़्लियों और छोटे बड़े तमाम गुनाहों से तौबा करते हैं, **प्यारे प्यारे मालिक !** हम से हमेशा हमेशा के लिये राज़ी हो जा और हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत फ़रमा اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم। बयान कर्दा रिवायत से येह भी मा'लूम हुवा कि हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **इल्मे ग़ैब** है जभी तो ब अ़ताए ख़ुदाए पाक क़ब्र का अ़ज़ाब मुलाह़ज़ा फ़रमा लिया जैसा कि बयान कर्दा ह़दीसे पाक से ज़ाहिर है। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत

www.dawateislami.net

मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़** में फ़रमाते हैं :

सरे अ़र्श पर है तेरी गुज़र दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
मलकूतो मुल्क में कोई शै नहीं वोह जो तुझ पे इयां नहीं

(ह़दाइक़े बख़्शिश स. 109)

क़ब्र में अ़ज़ाब हो रहा है : अल्लाह पाक की अ़त़ा से ग़ैब की ख़बरें देने वाले मक्की मदनी **मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक क़ब्र के पास तशरीफ़ लाए जिस में मय्यित को अ़ज़ाब हो रहा था तो इर्शाद फ़रमाया : "येह लोगों का गोश्त खाता (या'नी ग़ीबत करता) था।" फिर एक **तर टहनी** मंगवाई और उसे **क़ब्र** पर रख कर इर्शाद फ़रमाया : जब तक येह तर रहेगी इस के अ़ज़ाब में कमी रहेगी।

(اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج۲ص۳۵ حدیث۲۴۱۳)

क़ब्रों पर फूल डालना मुस्तह़ब है : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! गुज़श्ता दोनों अह़ादीसे मुबारका में पेशाब से न बचने वाले और **ग़ीबत** करने वाले के अ़ज़ाबे क़ब्र में मुब्तला होने का तज़्किरा है। हर मुसल्मान को एह़तियात़ के साथ ज़िन्दगी गुज़ारनी चाहिये। इन रिवायात में क़ब्र पर **तर शाख़** रखने का ज़िक्र है। इस ज़िम्न में **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपनी मश्हूर किताब "जाअल ह़क़" ह़िस्सा अव्वल सफ़ह़ा 240 ता 241 पर फ़रमाते हैं : कहा गया है कि इस लिये

www.dawateislami.net

अ़ज़ाब कम होगा कि जब तक (येह शाख़ें) तर रहेंगी तस्बीह़ पढ़ेंगी। इस ह़दीस की शर्ह़ में **अ़ल्लामा नववी** (رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه) फ़रमाते हैं : इस ह़दीस से उ़लमा ने क़ब्र के पास क़ुरआन पढ़ने को मुस्तह़ब फ़रमाया। क्यूं कि तिलावते क़ुरआन शाख़ की तस्बीह़ से ज़ियादा इस की ह़क़दार है कि इस से अ़ज़ाब कम हो। **त़ह़त़ावी** अ़ला मराक़िल फ़लाह़ सफ़ह़ा 364 में है : हमारे बा'ज़ मुतअख़्ख़िरीन अस्ह़ाब ने इस ह़दीस की वज्ह से फ़तवा दिया कि "ख़ुश्बू और फूल चढ़ाने की (मुसल्मानों में) जो आ़दत है वोह **सुन्नत** है।" मुफ़्ती साह़िब رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه मज़ीद फ़रमाते हैं : इस ह़दीस और मुह़द्दिसीन व फ़ुक़हा की इ़बारत से दो बातें मा'लूम हुईं। एक तो येह कि हर सब्ज़ चीज़ (या'नी सब्ज़े) का रखना हर मुसल्मान की क़ब्र पर जाइज़ है। ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन क़ब्रों पर (तर) शाख़ें रखीं जिन को अ़ज़ाब हो रहा था और दूसरे येह कि अ़ज़ाबे क़ब्र की कमी सब्ज़े की तस्बीह़ की बरकत से है..... लिहाज़ा अगर हम भी आज (क़ब्रों पर) फूल वग़ैरा रखें तो भी اِنْ شَآءَاللّٰه मय्यित को फ़ाएदा होगा बल्कि आ़म मुसल्मानों की क़ब्रों को कच्चा रखने में येह ही मस्लह़त है कि बारिश में इस पर सब्ज़ घास जमे और उस की तस्बीह़ से मय्यित के अ़ज़ाब में कमी हो।

है कौन कि गिर्या करे फ़ातिह़ा को आए
बेकस के उठाए तेरी रह़मत के भरन फूल

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 79)

www.dawateislami.net

اللہ

یاالٰہی! جو کوئی رسالہ "ایک مسلمان کی عزت" کے ۲۲ صفحات پڑھ یا سن لے دنیا و آخرت میں اُس کی عزت سلامت رکھ۔ اٰمین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہ وسلم

دُنیا و آخرت میں جب میں رہوں سلامت
پیارے پڑھوں نہ کیونکر تم پر سلام پیہم
(ذوقِ نعت)

صلوا علی الحبیب!
صلی اللہ علی محمد

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाज़े इशा आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ۞ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये **मदनी क़ाफ़िले** में आशिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ۞ रोज़ाना "**फ़िक्रे मदीना**" के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ के लिये "**मदनी इन्आ़मात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**मदनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

M.R.P.
₹ 18

01082092

DAWAT-E-ISLAMI

Faizane Madina, Mirzapur, Ahmedabad-01 091 93271 68200
421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006
feedbackmmhind@gmail.com *011-23284560, 8178862570*
www.dawateislamihind.net 9978626025 *T&C apply